प्रकाशनार्थ

कार्ल मार्क्स पर सम्मेलन - दिन-3

पटना, 18 जून। मार्क्सवाद पर आद्री द्वारा आयोजित पांच-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के तीसरे दिन सोमवार को ज्यां पाल सार्त्र स्मारक व्याख्यान देते हुए अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय की यूनिवर्सिटी प्रोफेसर गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक ने कहा कि ''आज मार्क्सवाद को प्रासंगिक बनाने के लिए हमें लचीले ढंग से सोचते हुए मार्क्सवाद को पुन:कल्पित करना है। हमें मार्क्सवादी दर्शन की व्याख्या ही नहीं, उसे बदलने की भी कोशिश करनी चाहिए।'' सुश्री स्पिवाक के व्याख्यान का शीर्षक था - ''आज हम मार्क्सवाद का उपयोग कैसे कर सकते हैं?'' उन्होंने कहा कि मार्क्स और एंजेल्स ने 1872 में ही कह दिया था कि साम्यवादी घोषणा पत्र कालातीत हो चुका है।

कॉर्पोरेट वित्तपोषण पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि निगमों की धनराशि की सहायता से किए जाने वाले विकास प्रयासों की समस्या यह है कि वे अच्छे परिणामों की रिपोर्ट करते हैं, बुरे परिणामों को छुपा लेते हैं, और अच्छे परिणाम अक्सर बुरे साक्ष्यों पर आधारित होते हैं।

ग्रामीण पश्चिम बंगाल के उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि यूएनडीपी की धनराशि से बने कुछ विद्यालय भवनों का उपयोग कभी भी विद्यालयों के लिए नहीं करके जानवरों के बाड़ों के रूप में किया गया। धनराशि के उपयोग के लिए जवाबदेह ''अधिकारियों द्वारा विज्ञापित दौरों'' को छोड़कर विद्यार्थी उन विद्यालयों में कभी नहीं जाते थे। यह जानने की कोई व्यवस्था नहीं थी कि विद्यार्थियों को जिस तरह से शिक्षा दी जाती है उसके लिए उनकी पृष्ठभूमि सही है या नहीं।

उन्होंने जोर देकर कहा कि हमलोगों को यह समझना चाहिए कि ''बराबर होने का अर्थ समान होना नहीं है''। ''हमलोग खुद को ऐसे व्यक्तियों के रूप में विकसित करने का प्रयास करके अपने लिए मार्क्सवाद को प्रासंगिक बना सकते हैं जो सिर्फ यह नहीं जानता हो कि पूंजीवाद को कैसे नियंत्रित किया जाय, बल्कि यह भी जाने कि उसे रोककर कैसे रखा जाय।''

आद्री द्वारा आयोजित पांच-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के तीसरे दिन रुडॉल्फ हिल्फरडिंग स्मारक व्याख्यान देते हुए अमेरिका के एटलांटा स्थित मोरहाउस कॉलेज की प्रोफसेर सिंथिया लुकास हेविट ने कहा कि चीन की आर्थिक प्रगति मार्क्सवाद और पूंजीवादी संकेंद्रण के संश्लेषण का अच्छा उदाहरण है। उन्होंने कहा कि आज की कुछ पश्चिमी पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं के पूंजीवाद के विपरीत चीन का पूंजीवाद गुलामी का उत्पाद न होकर समाजीकरण का उत्पाद है। साथ ही, उनके विपरीत, चीन की पूंजी उपनिवेशवाद और रुग्ण सैन्यवाद के जरिए नहीं हासिल की गई है।

ASIAN DEVELOPMENT RESEARCH INSTITUTE
BSIDC Colony, Off Boring-Patliputra Road, Patna - 800 013, Tel. : 0612-2575649, Fax : 0612-2577102
E-mail : adripatna@adriindia.org / adri_patna@hotmail.com, Website : www.adriindia.org

प्रोफेसर सिंथिया के व्याख्यान का शीर्षक था – 'कार्ल मार्क्स के पूंजी के संकेंद्रण का महत्वपूर्ण सिद्धांत, संकट और अफ्रीका केंद्रित प्रत्युत्तर'। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के वित्तीय उपलब्धता सर्वेक्षण (एफएएस) के आंकड़ों का विश्लेषण करते हुए उन्होंने यह दर्शाने की कोशिश की कि पूंजी की वैश्विक परिपूर्णता, विस्तारवादी चक्र के साथ उसके संबंध और अंतर्विरोधों की अपरिहार्यता के बारे में मार्क्स का अनुमान कितना सही था। उन्होंने अफ्रीकी देशों की ओर संभावना के लिहाज से नजर डाली जो यूरोप केंद्रित क्रांतिकारी प्रक्रियाओं के विकल्प का अनुसरण कर सकता है।

एम. एन. राय स्मारक व्याख्यान शेरिफ सालिफ एसवाइ इंटरनेशनल कल्संल्टिंग सविर्सेस, डकार के प्रबंध निदेशक शेरिफ सालिफ एसवाइ द्वारा दिया जाना था लेकिन उनके पहुंच नहीं पाने पर उनके आलेख का पाठ अध्यक्षता कर रहे ज्यां जोसेफ बिल्लो ने पढ़ा। व्याख्यान का शीर्षक था – 'अफ्रीका में पूंजीवाद, नवउदारवाद और विकास : अफ्रीकी संघ का प्रतिसाद'।

सम्मेलन के तीसरे दिन के उल्लेखनीय वक्ताओं में 'किंग, मार्क्स और विश्वव्यापी मूल्यों की क्रांति' विषयक फ्रेंज फैनन स्मारक व्याख्यान देने वाले अमेरिका के एटलांटा स्थित मोरहाउस कॉलेज के एसोसिएट प्रोफेसर एंड्रू जे डगलस; 'मार्क्स के आलोचनात्मक सिद्धांत का विकास : विचार की दो धाराएं' शीर्षक ज्योर्जी मार्कस स्मारक व्याख्यान देने वाले एल कोलेजियो डि मैक्सिको के प्रोफेसर जूलियो बोल्टवीनिक; और 'मेरे स्राफा' शीर्षक से पियरो स्राफा स्मारक व्याख्यान देने वाले बंगलोर स्थित अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अजीत सिन्हा प्रमुख थे।

जहां अर्जेंटिना के व्यूनस आयर्स विश्वविद्यालय के प्रोफेसर मिगुएल वेड्डा ने 'निबंधकार के बतौर हेनरिक हेने और कार्ल मार्क्स : आलोचक बुद्धिजीवियों के उद्भव और कार्य के संबंध में' शीर्षक बर्टोल्ट ब्रेख्त स्मारक व्याख्यान दिया, वहीं बेल्जियम के लोउवेन कैथोलिक विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफेसर रिकार्डो पेट्रेला ने 'मार्क्सवाद और आम आदमी : मानवता के लिए नई चुनौतियां' विषय पर ऑस्कर लांज स्मारक व्याख्यान प्रस्तुत किया।

तीसरे दिन नवयुग गिल, बाबक अमीनी, सी सरतचंद और स्पेंसर ल्योनापर्ड द्वारा आलेख पाठ भी किए गए। तीसरे दिन की कार्यवाहियों की समाप्ति मार्सेल्लो मुस्तो की पुस्तक 'अनदर मार्क्स' के लोकार्पण से हुई। पुस्तक का लोकार्पण लॉर्ड मेघनाद देसाई ने किया।

पूर्व के सत्रों में 'कार्ल मार्क्स और अफीम युद्ध' विषय पर निकोलाई बुखारिन स्मारक व्याख्यान रोम के राष्ट्रीय अभिलेखागार के महानिदेशक यूजेनियो लो सार्डो द्वारा दिया गया जबकि 'मार्क्स-21 : दार्शनिक विरासत की पुन:प्राप्ति' विषय पर रूस के लोमोनोसोव मास्को राजकीय विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर मिखाइल यू पावलोव' द्वारा श्रीपाद अमृत डांगे स्मारक व्याख्यान दिया गया।

(अंजनी कुमार वर्मा)

ASIAN DEVELOPMENT RESEARCH INSTITUTE
BSIDC Colony, Off Boring-Patliputra Road, Patna - 800 013, Tel. : 0612-2575649, Fax : 0612-2577102
E-mail : adripatna@adriindia.org / adri_patna@hotmail.com, Website : www.adriindia.org